आतंकवाद के सहयोगी के रूप में महिलाओं की प्रस्थित (Women's Status in Kashmir conflict-As an Agency of Violence)–

हरीश कुमार यादव

शोध छात्र
राजनीतिशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालयए इलाहाबाद

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाएं हमेशा ही पुरूषो से कमतर मानी जाती हैं अथवा एक प्रकार से वह अस्तित्वहीन जीवन जीती हैं।

"यहाँ तक की प्राचीन ग्रीक एवं रोमन दार्शनिक भी इस पितृसत्ता सम्बन्धी विचारों का समर्थन करते हैं। महान ग्रीक दार्शनिक अरस्तु के विचारों में 'पुरूष प्राकृतिक रूप से श्रेष्ठ है और महिलाएं, बच्चे तथा दास पदसोपान की दृष्टि से पुरूष के अधीन है।'[1]

अब ऐसे समाज में जहाँ सहज ही यह मान्यता स्वीकृत है कि महिलाएं पुरूषो के अधीन हैं वहां महिलाओं की प्रस्थित के विषय में अनुमान लगाया जा सकता है। विशेषकर तब जब वह क्षेत्र किसी सशस्त्र संघर्ष (सशस्त्र) से जूझ रहा हो तब वहाँ महिलाओं की प्रस्थित के बारे में सहज ही कल्पना की जा सकती है।

कश्मीर में व्याप्त संघर्ष में महिलाओं का जिक्र अधिकांशतः एक पीड़ित के रूप में ही होता है। किन्तु तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि घाटी में व्याप्त संघर्ष में महिलाएँ हिंसा के कर्ता (अप्रत्यक्ष) के रूप में भी भागीदार हैं। 'महिलाएँ, युद्ध और सुरक्षा के मध्य समीकरण परम्परागत रूप से अध्ययन का मुख्य विषय नहीं रहे हैं।'[2]

कश्मीर संघर्ष–एक संक्षिप्त परिचय–'कश्मीर संघर्ष की जड़ें औपनिवेशिक काल से जुड़ी हैं जब ब्रिटिश सरकार ने कश्मीर को 75 लाख रूपये में हिन्दू डोगरा महाराजा गुलाब सिंह को 1846 की अमृतसर की संधि के अन्तर्गत बेच दिया था।'[3]

1947 में स्वतंत्रता के पश्चात् कश्मीर संघर्ष भारत एवं पाकिस्तान के मध्य तनाव का नतीजा है। किन्तु पिछले ढाई दशकों में इस संघर्ष में ज्यादा तीक्ष्णता आई है।

''सीमा काजी कश्मीर संघर्ष को मुख्यतः दो भागो में बांट कर देखती है, पहला भाग जो 1989 से 1990 के मध्य का काल था। यह भाग असंप्रदायिक व उदारवादी संघर्ष का काल था जिसमें जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट जैसे गुटों का दबदबा था। ये गुट कश्मीर की आजादी के प्रति प्रतिबद्ध थे। दूसरे भाग में हिजबुल मुजाहिद्दीन और लश्कर–ए–तोएबा जैसे रूढ़िवादी समूहों के आते ही संघर्ष का स्वरूप बदल जाता है और हिंसा का एक दौर निकल पड़ता है।'[4] 'इस क्षेत्र में आतंकियों को पाकिस्तान द्वारा खुला समर्थन दिया जाता है। यही कारण है कि इस क्षेत्र में भारतीय सैन्य बलों का भारी सैन्य जमावड़ा है। किन्तु इन सब सशस्त्र विद्रोहों के बावजूद, भारत सरकार ने इस क्षेत्र को अधिकारिक रूप से संघर्षरत क्षेत्र घोषित नहीं किया है।'[5]

कश्मीर संघर्ष में महिलाओं की प्रस्थित–

जब भी किसी संघर्ष में महिलाओं के संदर्भ में चर्चा होती है तब वह चर्चा केवल उसे पीड़ित के रूप में ही रेखांकित करने तक ही सिमट जाती है। कश्मीर में व्याप्त संघर्ष भी इसका अपवाद नहीं है। बतौर पीड़ित कश्मीरी महिलाओं की स्थिति पर विस्तृत अध्ययन हुए हैं किन्तु कश्मीर के संघर्ष में हिंसा के कर्ता (अप्रत्यक्ष) के रूप में इनकी चर्चा बमुश्किल ही हुई है। अतः प्रस्तुत आलेख में कश्मीरी महिलाओं की कश्मीर संघर्ष में बतौर पीड़ित एवं हिंसा के कर्ता (Agency of Violence) उनकी प्रस्थित, अलगाववादी संगठन में इनकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। **आतंकवाद के सहयोगी के रूप में महिलाओं की प्रस्थित**

(Women's Status in Kashmir conflict-As an Agency of Violence)–

जब भी कश्मीर संघर्ष में महिलाओं का उल्लेख होता है उन्हें अधिकांशतः पीड़ितों के रूप में ही उल्लेखित किया जाता है, किन्तु इस तस्वीर का दूसरा पहलू भी है जिसमें महिलाएँ कश्मीर में व्याप्त संघर्ष में नकारात्मक भूमिका में हैं। इस बात के कोई प्रमाण नही हैं कि महिलाएँ सशस्त्र प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं और आतंकवादियों के साथ काम कर रही हैं।[6]

---

[1] http://southasiajournal. net/**Conflict-and-women-a-study-of-Kashmir-valley** (acesed on 17.02.2018)
[2] Shekhawat Seema, "***Gender, Conflict and Peace in Kashmir Invisible Stakeholder"s***, CAMBRIDGE UNIVERSITY PRESS, Delhi-2014, P. 06
[3] http://southasiajournal. net/**Conflict-and-women-a-study-of-Kashmir-valley** (acesed on 17.02.2018)
[4] Kazi ***Seema, "Between Democracy & Nation: Gender and Militarisation in kashmir"***, Women Unlimited, 2009, P. 140
[5] Thakur Seema, "***Women, Peace and Security: Implementation of the UNSCR 1325 in South Asia"***, Regal Publication , 2015 New Delhi, P-147
[6] Manchanda Rita (E.d.), "***Women and Politics of Peace : South Asia Narratives on Militarization, Power, and Justice"***, Sage publication, 2017, p 133

नेपाल के छापामार माओवादी युद्ध एवं श्रीलंका में नृजातीय संघर्ष में महिलाओं की सक्रिय भूमिका के उलट घाटी में इन महिलाओं की प्रस्थित आंतकियों के सहायक (Backup Role) के रूप तक ही सीमित है।

1990 के प्रारम्भिक सालों से लेकर आज तक घाटी के संघर्ष में भले ही महिलाओं ने शस्त्र प्रयोग नहीं किये किन्तु सार्वजनिक प्रदर्शनों में यह महिलाएँ खुलकर भागीदारी करती हैं जहाँ यह जोर–जोर से भारत विरोधी नारे लगाती है और कश्मीर को भारत से पृथक 'आज़ादी' देने की मांग उठाती है। यह महिलाएँ अपने स्तर पर आतंकियों एवं उनके द्वारा किये जाने वाले कृत्यों को यथासम्भव नैतिक, आर्थिक एवं भावनात्मक समर्थन प्रदान करती हैं। यह महिलाए सैन्यबलों की कार्यवाही में मारे गये आंतकियों की अंतिम क्रिया का सक्रिया भाग भी बनती है।
घाटी में व्याप्त संघर्ष में सार्वजनिक हड़ताल का आयोजन करना, सुरक्षाबलों पर पत्थरबाजी करना, कुछ कट्टरपंथी संगठनों की विचारधारा को जबरन लागू करने में सक्रिय भूमिका निभाना, आतंकियों के संदेशों को निर्दिष्ट स्थान तक पहुंचाना, घायल आतंकियों को ईलाज की सुविधा उपलब्ध कराना, आतंकियों के लिए भोजन की व्यवस्था करना, प्रदर्शन के दौरान युवाओं को पानी पिलाना एवं पुलिस लाठी चार्ज के दौरान उनकी सहायता आदि कार्यों में घाटी की कुछ महिलाएँ एवं महिला समूह सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते हैं।
यहाँ तक की कई बार यह महिलाएँ सहर्ष ही आतंकियों की ढाल बनने को तैयार हो जाती हैं ताकि वह सुरक्षाबल से बच जाएं।

जुलाई 2008 में राज्य के तत्कालीन गर्वनर द्वारा अमरनाथ श्राइन बोर्ड को तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए ज़मीन देने के फैसले के विरूद्ध घाटी की महिलाओं ने भारी संख्या में अपने पूरे इस्लामिक धार्मिक चिन्हों को धारण करते हुए बेहद आक्रामक विरोध प्रदर्शन काफी लम्बी अवधि तक किया। यह प्रदर्शन पूर्णतः साम्प्रदायिकता के तत्वों से परिपूर्ण था जिसका नेतृत्व महिलाएँ कर रही थीं।
भारत विरोधी भावनाएँ एवं आतंकी विचारधारा का प्रेषण युवा पीढ़ी के लोगों को प्रेषित करने का कार्य इन महिलाओं द्वारा किया जाता है। मारे गये आंतकियों की माताएँ अंतिम संस्कार में व्याख्यान द्वारा अपने बेटों की मौत को बलिदान के रूप में गरिमामयी रूप में पेश करती हैं और युवाओं से इस बात का आह्वान करती हैं कि वह इस संघर्ष में सहर्ष बलिदान हेतु तैयार रहें। अपने भड़काऊ, साम्प्रदायिकता के मूल्यों से ओत–प्रोत भाषणों के द्वारा वह जनसमूह खासकर युवा पीढ़ी को भारत–विरोधी संघर्ष को मुहिम में सक्रिय भूमिका निभाने तथा आतंकवादियों का सहयोग करने की अपील करती हैं। 'इसी क्रम में नवयुवकों की भावनाओं को उद्वेलित करने के लिए कुछ महिलाएँ सार्वजनिक तौर पर इस बात की पुष्टि करती हैं कि उनके साथ भारतीय सेना के जवानों ने बलात्कार किया है।'[7]
कश्मीर संघर्ष में महिलाओं की भूमिका के अतिरिक्त उन अलगाववादी संगठनों का उल्लेख भी आवश्यक है जो कि महिलाओं के नेतृत्व में संचालित हो रहे हैं। यह संगठन अलगाववादी एवं भारत–विरोध की भावना को भड़काकर एक वृहद जनआन्दोलन का स्वरूप प्रदान करने का कार्य करते हैं इसके सदस्य सक्रिय हिंसा में भागीदारी नहीं करते हैं। किन्तु अपने विचारों द्वारा आतंकियों के हिंसक कृत्यों को न्यायसंगत बताते हैं।
ऐसे संगठनों के क्रम में सर्वप्रथम नाम आता है दुख्तरन–ए–मिल्लत (Dukhtaran-e-Millat) का जिसका नेतृत्व कश्मीर में सक्रिय अलगाववादी नेता आसिया अंद्राबी (Asiya Andrabi) द्वारा किया जाता है। आसिया स्वयं एक कुलीन वर्ग की उच्च शिक्षा प्राप्त महिला हैं जिन्होंने 1981 में इस अलगाववादी संगठन की स्थापना की।

अंद्राबी एक साक्षात्कार में स्वयं के शब्दों में अपनी एवं अपने संगठन के विषय में बताते हुए कहती हैं कि–

''1981 में मैने एक विद्यालय प्रारम्भ किया जिसके लिए महिलाओं को इक्ट्ठा करने के लिए मैनें घर–घर जाने की मुहिम प्रारम्भ की। मैं उन्हें इस्लाम की शिक्षा के विषय में बताना चाहती थी साथ ही इस्लाम में उनकी प्रस्थित के विषय में भी। 1987 में हम महिलाओं के साथ बाहर (In Public Sphere) आये और विज्ञापनों में महिलाओं के नग्न प्रदर्शन के विरूद्ध शान्तिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया किन्तु साथ ही मैनें कश्मीर के अनुवृद्धि (Accession) सम्बन्धी सवाल भी पूछे तबसे मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कश्मीर भारत का हिस्सा नहीं है। जिसके परिणामस्वरूप मेरे कार्यालय पर छापा मारा गया एवं उसे बन्द (Seal) कर दिया गया। पुलिस ने मेरे विरूद्ध गिरफ्तारी वारण्ट जारी किया जिस कारण मैं 21 दिनों के लिए भूमिगत हो गई। 1988–89 में मैनें भारत–विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में हमने नैतिक और राजनैतिक स्वरूप में इस आन्दोलन में शामिल हुए। लेकिन जहाँ तक सवाल आतंकवाद से सम्बन्धित था, हमने अपने पुरूषों का आह्वान किया और कहा ये आप का कार्य है हमारा नहीं। हमने लोगों से मिलना प्रारम्भ किया और उन्हें उन समस्याओं के बारे में बताना प्रारम्भ किया जिससे हम कश्मीरी ग्रस्त हैं, कैसें भारत ने गैर–कानूनी तरीके से इस क्षेत्र पर कब्जा किया हुआ है। इस बारे में हमें लोगों को शिक्षित करने का कार्य करना है और यह कार्य हमारे संगठन की महिलाओं द्वारा किया जा रहा है।''[8] आसिया इसके अतिरिक्त इस्लाम की कट्टर परम्पराओं में यकीन रखती हैं एवं अपने संगठन द्वारा इसका प्रचार–प्रसार एवं अनुपालन सुनिश्चित करती हैं। इसी क्रम में उनके संगठन में घाटी की महिलाओं को इस बात के लिए बाध्य करना प्रारम्भ किया कि वे सार्वजनिक जीवन में बुर्का पहनें।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य हे कि 'घाटी में प्रचलित परम्परागत इस्लाम का जो स्वरूप है वह उदारवादी सूफी इस्लाम है। बुर्का कभी भी इस समाज का अनिवार्य अंग नहीं रहा है।'[9] किन्तु कश्मीर संघर्ष में कट्टरपंथी तत्वों के अधिपत्य ने इसे प्रचलन में लाने के लिए पूरा प्रयास किया। जिन महिलाओं ने इस बात का पालन नहीं किया उनके चेहरे पर अंद्राबी के संगठन के सदस्यों द्वारा रंगीन पानी अथवा पेंट फेंका गया, उन्हें सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा किया गया। इस संगठन का स्पष्ट उद्देश्य है कि वह आतंकवाद का समर्थन करता है, कश्मीर का पाकिस्तान, में विलय चाहता है ताकि समाज में इस्लामी शिक्षा व संस्कृति को लागू करना चाहता है।

---

[7] Shekhawat Seema, "***Gender, Conflict and Peace in Kashmir Invisible Stakeholders"***, Cambridge University Press, Delhi-2014, P. 14

[8] Bhaduri . Aditi, **Inshallah Kashmir will become part of Pakistan (Interview) Outlook**, 14 August 2006

[9] Shekhawat Seema, "***Gender, Conflict and Peace in Kashmir Invisible Stakeholders"***, Cambridge University Press, Delhi-2014, P. 106

मुस्लिम ख्वातिन मर्कज(Muslim Khawateen Markaz) (MKM) एक अन्य सक्रिय अलगाववादी संगठन है जिसकी स्थापना 1989 में हुई थी। इस संगठन से बढ़ी संख्या में मुस्लिम महिलाएँ यहां तक कि उच्च शिक्षित व कौशलपरक (Professionals) यथा डॉक्टर, वकील भी जुड़ीं। 'अपने प्रारम्भिक काल में यह समूह परोपकार के कार्यों में लगा था किन्तु बाद के सालों में यह अलगाववादी विचारधारा के प्रभाव में आकर आतंकवाद का समर्थक संगठन बन गया।'[10]

'दुख्तरन–ए–मिल्लत के उलट यह संगठन भारत एवं पाकिस्तान दोनों से ही आज़ाद होना चाहता है। इस संगठन का मानना है कि दोनों ही देशों ने इस क्षेत्र पर कब्जा किया है।'[11]

विचारधारा में दुख्तरन–ए–मिल्लत की अपेक्षा उदार होने के बावजूद यह संगठन भी आतंकवादी हिंसा का समर्थक है।

एक अन्य अलगाववादी समूह जिसका नेतृत्व फरीदा डार (Farida Dar) द्वारा किया जाता है इस क्षेत्र में सक्रिय है। दुख्तरन–ए–मिल्लत और मुस्लिम ख्वातिन मर्कज (MKM) के उलट इस संगठन में महिला एवं पुरूष दोनों ही सक्रिय हैं। यह संगठन भी कश्मीर संघर्ष में आतंकवादी कृत्यों का समर्थन करता है एवं अलगाववादी विचारधारा को समर्थन देता है।

दुख्तरान–ए–तोयबा (Dukhtaran-E-Toiba) नामक एक अन्य अलगाववादी समूह है जिसके प्रारम्भिक सदस्यों जिसमें करीब 20 लड़कियाँ थीं, को पाकिस्तान में प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण में इन्हें हल्के हथियार चलाना तथा इस्लामी कट्टरपंथी की शिक्षा दी गयी। ''इन्हें भारतीय सेना के लोगों को हनी ट्रैप (Honey Tarp) में फांस कर उनसे रणनीतिक सूचना प्राप्त करने के लिए भी प्रशिक्षित किया गया था।

इन सबके अतिरिक्त कुछ घटनाओं से यह भी पता चलता है कि किस प्रकार सीमा पर पाकिस्तान में व्यवस्थित कैम्पों में युवा महिलाओं को जासूस, संदेशवाहक एवं पुरूष आतंकवादियों के सहायक के रूप में तैयार करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। महिलाओं को आतंकी साहित्य के साथ–साथ छोटे हथियार जैसे बन्दूक और ग्रेनेड तक प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत आलेख में वर्णित महिलाओं की संघर्ष में प्रस्थित से यह स्पष्ट है कि कश्मीर के संघर्ष का सबसे आसान एवं सबसे पीड़ित पक्ष महिलाएँ हैं।

कश्मीर में महिलाओं को संघर्ष के परिणाम दीर्घकाल तक एवं मानव जीवन को प्रभावित करने वाले प्रत्येक क्षेत्र तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक में प्रभावित करते हैं।

घाटी के संघर्ष में महिलाओं के प्रति होने वाली यौन हिंसा में आतंकवादियों के साथ–साथ सुरक्षाबलों की उपस्थिति चिंता का विषय है। क्षेत्र की सुरक्षा के नाम पर सैन्यबल को मिले अधिकारों द्वारा मानव सुरक्षा के नाम पर सैन्य बल को मिले अधिकारों द्वारा मानव सुरक्षा का हन्न एक लोकतांत्रिक देश की गरिमा के अनुकूल नहीं है।

कश्मीर संघर्ष में हिंसा की सहायक भूमिका को न्यायसंगत ठहराते हुए यह कहना कि 'कश्मीर संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी उन्हें घरेलू कार्यों से मुक्ति प्रदान करती है और उन्हें सशक्त बनाती हैं।'[12]

प्रथमदृष्टया ऐसे कथन यद्यपि सत्यता का भान कराते हों किन्तु विस्तार से कश्मीरी समाज का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि महिलाएँ इस समाज में और न ही इस संघर्ष में सशक्त हैं। घाटी के संघर्ष में जो महिलाएँ पीड़ित के रूप में हैं वह तो पितृसत्ता की रूढ़िवादी परम्परा का शिकार हैं ही किन्तु वे महिलाएँ जिनकी प्रस्थित संघर्ष में हिंसा के कर्ता के रूप में है, वह यह भूल जाती हैं कि पितृसत्तात्मक समाज की संरचना समाज के हर वर्ग एवं हर व्यवहार को नियंत्रित व प्रभावित करती है। अलगाववादी पुरूष संगठन महिलाओं का प्रयोग छदम् युद्ध (Propaganda War) के लिए तो करते हैं किन्तु यौन हिंसा से पीड़ित महिलाओं को न्याय दिलाने अथवा इस सामाजिक कलंक को चुनौती देने के लिए सामने नहीं आते हैं।

कश्मीर संघर्ष में व्याप्त हिंसा में सहायता के लिए शायद ही इन महिलाओं के कार्यों को महत्व दिया जाता है। बगैर इनके सहयोग के कश्मीर संघर्ष को विस्तार मिलना असम्भव था किन्तु इसके बावजूद घाटी के संघर्ष में इन महिलाओं की प्रस्थित सहायक के रूप में ही है क्योंकि 'सामान्यतः यह मान्यता है कि महिलाएँ एक अच्छी अनुयायी होती हैं किन्तु नेतृत्वकर्ता नहीं।'[13]

एक पूर्व आतंकी के शब्दों में 'महिलाएँ दिये गये कार्य को करने में कुशल होती है किन्तु इस काबिल नहीं होती कि आन्दोलन को सफल बनाने की रणनीति बना सके।'[14]

---

[10] Ibid PP-109-110
[11] Ibid P-110
[12] Shekhawat Seema, ***"Gender, Conflict and Peace in Kashmir Invisible Stakeholders"***, Cambridge University Press, Delhi-2014, P. 14

[13] Ibid P-15
[14] Ibid P-15

संदर्भ सूची (Bibilography)

- Butalia Urvashi (E.d.), **" *Speaking Peace : Women's Voices From Kashmir*"**, Kali for Women, New Delhi, 2002.
- Hans Asha, Rajagopalan Swarna (E.d.), ***"Openings for Peace : UNSCR 1325 Women and Security In India"***, Sage Puliccation, New Delhi, 2016.
- Manchanda Rita (Ed.), ***" Women And Politics of Peace: South Asia Narreatives On Militarization, Power, and Justice",*** Sage Publication, New Delhi, 2017.
- Murthy Laxmi, and Varma Mitu (Ed.), ***"Garrisoned Minds: Women and Armed Conflict in South Asia"*** Speaking Tiger Books, Delhi, 2016.
- Shekhawat Seema, ***"Gender, Conflict and Peace in Kashmir: Invisible Stakeholders"***, Cambridge University Press, Delhi, 2014.
- Sjoberg Laura & Gentry E. Caron (Ed.), ***"Women, Gender and Terrorism"***, The University of Georgia Press, Georgia, 2011.
- Srivastva Garima, ***"Deh He Desh: Croasia Pravas Diary"***, Rajpal, New Delhi, 2017.
- Thakur. Dr. Seema, ***"Women, Peace and Security: Implementation of the UNSCR 1325 in South Asia"***, Regal Publication, New Dehli, 2015.